

Absolute Truth

Know God Know Truth

Monthly Newsletter of ISKCON Delhi-NCR



News

✿ Taking Prabhupada's books to Every Town (31st Mar onwards) (ISKCON, Punjabi Bagh)

The Temple Sankirtan team at ISKCON Punjabi Bagh left for a small town named Samba near Jammu. The team is residing in this town for a month with a single-minded resolve to distribute Srila Prabhupada's books to every home. The team's enthusiasm sparked a phenomenal start - Over 2300 books, 5 Srimad Bhagavatam sets, 4 Chaitanya Charitamrita sets and 10 Prabhupada Lilamrita sets were distributed in the first week itself. The team is currently stationed in the same town and is leaving no stone unturned to reach out to every resident.



समाचार

✿ प्रभुपाद की पुस्तकों को हर नगर में पहुँचाना (31 मार्च से) (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

इस्कॉन पंजाबी बाग से, मंदिर संकीर्तन टीम ने जम्मू के पास सांबा नामक एक छोटे से स्थान के लिए प्रस्थान किया। श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों को प्रत्येक घर में वितरित करने के संकल्प के साथ पूरे संकीर्तन दल ने एक महीने इस नगर में प्रवास किया। जहाँ टीम के उत्साह का एक अभूतपूर्व शुभारंभ हुआ - 2300 से अधिक पुस्तकें, 5 श्रीमद भागवतम सेट, 4 चैतन्य चरितामृत सेट और 10 प्रभुपाद लीलामृत सेट प्रथम सप्ताह में ही वितरित हो गए। टीम वर्तमान में उसी कस्बे में प्रवास कर रही है और प्रत्येक निवासी तक पहुँचने में कोई कमी नहीं छोड़ रही है।

✿ यूपीएससी के उम्मीदवारों हेतु बेस (6 अप्रैल) (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

युवा मंच (IYF) ने विशेष रूप से UPSC के उम्मीदवारों हेतु करोल बाग में एक नया BACE (भक्तिवेदांत अकादमी फॉर कल्चर एंड एजुकेशन) स्थापित किया है। यह BACE परिणाम है, पिछले कई माह से करोल बाग में रहने वाले छात्रों के साथ कई कार्यक्रमों एवं व्यस्तताओं का। BACE के नेतृत्व वाले दल का उद्देश्य, प्रातःकाल की साधना को विकसित करना, BACE के समर्पित पुस्तकालय में अध्ययन - मैराथन आयोजित करना एवं आस - पड़ोस में प्रसादम वितरित करना है।



✿ BACE for UPSC Aspirants (6th Apr) (ISKCON, Punjabi Bagh)

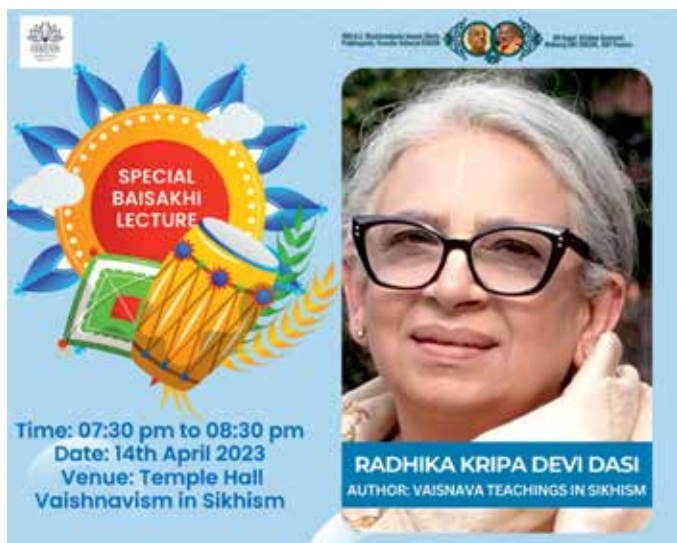
The Youth Forum (IYF) has set up a new BACE (Bhaktivedanta Academy for Culture & Education) in Karol Bagh specifically for the UPSC aspirants. This BACE is a result of several engagements with the students residing in Karol Bagh over the last many months. The leadership team for the BACE aims to inculcate the morning routine, organize study marathons in the dedicated library of the BACE, and distribute prasadam in the neighborhood.

✿ Visit to the Purushottama Kshetra (7th – 10th Apr) (ISKCON, Punjabi Bagh)

A group of 90 congregation devotees visited the holy city of Sri Jagannath Puri. The group led by H.G. Jai Murari Prabhu and H.G. Gopi Priya Mataji along with H.G. Vishnu Vahan Prabhu visited all the significant holy sites in and around Puri including Siddha Bakul, Haridas Thakur's samadhi, Sakshi Gopal, Alalanath, Sarvabhauma Bhattacharya's place of residence. The trip was ornamented with kathas throughout the day, kirtans in the evening, and scrumptious prasadam throughout.

✿ Vaishavism in Sikhism (14th Apr) (ISKCON, Dwarka)

A special lecture was delivered by H.G. Radhika Kripa Mataji on the occasion of Baisakhi. The lecture involved learning about the Vaishnav Teachings in Sikhism.



✿ Beginning of Tulasi Jala dana (15th April)

Tulasi Jala Dana is an annual festival, celebrated during the month of Jyestha. Tulasi, who is very dear to the Lord is served by an offering of water, throughout the day. This is to provide her relief from the scorching heat of the summer month. This festival was observed from April 15th. The serving of the pure devotee pleases the Lord and attracts the mercy of a Vaishnava and Krishna too.

✿ Srivas Sankirtan's journey to Bihar - distributing mercy far & wide (ISKCON, Punjabi Bagh)

The congregation Sankirtan Team - Srivas Sankirtan has

✿ पुरुषोत्तम क्षेत्र की यात्रा (7-10 अप्रैल) (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

भक्त मंडली के 90 भक्तों के एक समूह ने, श्री जगन्नाथ पुरी पवित्र धाम की यात्रा की। श्रीमान जय मुरारी प्रभु एवं श्रीमान गोपी प्रिया माताजी के नेतृत्व में समूह ने, श्रीमान विष्णु वाहन प्रभु के साथ, सिद्ध बकुल, हरिदास ठाकुर की समाधि, साक्षी गोपाल, अलारनाथ, सर्वभौम भट्टाचार्य के निवास स्थान सहित पुरी एवं उसके आसपास के सभी महत्वपूर्ण पवित्र स्थलों का दर्शन किया। पूरी यात्रा अपने सभी दिनों में कथा, संध्या कालीन कीर्तन तथा स्वादिष्ट प्रसादम से अलंकृत रही थी।



✿ सिख पंथ में वैष्णववाद (14 अप्रैल) (इस्कॉन, द्वारका)

बैसाखी के विशेष अवसर पर श्रीमती राधिका कृपा माताजी द्वारा एक विशेष व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान में सिख धर्म में वैष्णव शिक्षाओं के विषय में सीख शामिल थीं।

5. तुलसी जल दान आरम्भ (15 अप्रैल)

तुलसी जल दान एक वार्षिक उत्सव है, जो ज्येष्ठ के महीने के मध्य मनाया जाता है। तुलसी, जो भगवान् को अति प्रिय है, उन्हें हर दिन जल चढ़ाकर उसकी सेवा की जाती है। यह उपक्रम उन्हें गर्मी के महीने की चिलचिलाती धूप से आराम दिलाने हेतु किया जाता है। यह पर्व 15 अप्रैल से मनाया गया था। शुद्ध भक्त की सेवा करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं और यह सेवा एक वैष्णव एवं कृष्ण की दया को भी आकर्षित करती है।



been moving around the cities and country, distributing Prabhupada's books, teachings, and the Holy names. In the month of March, the team of devotees led by H.G. Padmanabha Prabhu and H.G. Sugopi Mataji in association with H.G. Pavitra Hari Prabhu journeyed to a village in Bihar to hold a daily pandal program for 3 days. The program entailed relevant lectures, Kirtans, Palki yatra, Prasadam, and, Book distribution with the residents. The team returned back and was inspired for many more such excursions in 2023.



✿ Serving the Cows (ISKCON Namahatta, East of Kailash)

When The Supreme Personality of Godhead Krishna appeared on this earth in His original form; He brought a replica of His original abode Goloka Vrindavan with Him. The paraphernalia that appeared with His beautiful abode was His friends and family, Yamuna, Govardhan, and especially His beloved cows and calves. He spent His childhood playing with these cows and calves. It clearly shows the importance of cows for the sustenance of life and love in this universe. Going beyond it; the cow is even considered a mother according to our scriptures. Unfortunately, the so-called modernization and civilization have posed a severe threat to all living beings by slaughtering cows and other animals mercilessly. Once a cow grows old and stops giving milk, their owner disowns them because they are of no use to them. Thousands of such innocent cows are left abandoned on the street and become the victim of accidents. Following the teachings and footsteps of our Acharyas, Bal Gopal Sanga an initiative of Vaikuntha Fun School decided to serve these

✿ श्रीवास संकीर्तन की बिहार यात्रा - दूर-दूर तक दया का वितरण

(इस्कॉन, पंजाबी बाग)

भक्त मण्डली संकीर्तन दल – “श्रीवास संकीर्तन यात्रा” प्रभुपाद की पुस्तकों, उपदेशों एवं पवित्र हरिनाम का वितरण करते हुए, विभिन्न नगरों और देशों में घूम रही है। मार्च के महीने में, श्रीमान पवित्र हरि प्रभु के सहयोग से श्रीमान पद्मनाभ प्रभु एवं श्रीमती सुगोपी माताजी के नेतृत्व में भक्तों की टीम ने 3 दिनों के लिए एक दैनिक पंडाल कार्यक्रम आयोजित करने हेतु बिहार के एक ग्राम की यात्रा की। कार्यक्रम में स्थानीय निवासियों के साथ अपरिहार्य, प्रासंगिक व्याख्यान, कीर्तन, पालकी-यात्रा, प्रसादम और पुस्तक वितरण शामिल था। संकीर्तन दल, 2023 में ऐसी कई और यात्राओं हेतु प्रेरित होकर लौटा है।

✿ गौ-सेवा

(इस्कॉन नामहट्टा, ईस्ट ऑफ कैलाश)

जब पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री कृष्ण अपने मूल स्वरूप में इस धरती पर प्रकट हुए; वे अपने साथ अपने मूल निवास गोलोक वृंदावन की प्रतिकृति भी लाए। उनके सुंदर निवास के साथ प्रकट होने वाली सामग्री उनके मित्र एवं परिवार, यमुना, गोवर्धन और विशेष रूप से उनकी प्यारी गायें एवं बछड़े भी थे। उन्होंने अपना बालपन इन गायों और बछड़ों के साथ खेलते हुए बिताया। इस ब्रह्मांड में प्रेम एवं जीवन के निर्वाह हेतु गायों के महत्व को यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इससे भी ऊपर; गाय को हमारे शास्त्रों के अनुसार माता भी माना गया है। दुर्भाग्य से, तथाकथित आधुनिकीकरण एवं सभ्यता ने गायों एवं अन्य जानवरों का निर्दयता से वध करके सभी जीवित प्राणियों हेतु एक गंभीर संकट पैदा कर दिया है। एक बार जब कोई गाय बूढ़ी हो जाती है और दूध देना बंद कर देती है, तो उनका मालिक उन्हें त्याग देता है क्योंकि वे उनके लिए किसी काम की नहीं होतीं। ऐसी हजारों निरीह गायों को सड़क पर परित्यक्त छोड़ दिया जाता है और जो दुर्घटनाओं में पीड़ित हो जाती हैं। हमारे आचार्यों की शिक्षाओं और पदचिन्हों पर चलते हुए वैकुण्ठ फन स्कूल की एक पहल बाल गोपाल संघ ने इन निराश्रित और असहाय प्राणियों की सेवा करने का निर्णय किया। इस महीने एकत्र किए गए दान से महारौली स्थित एक गौशाला में अंधी गायों को ताजा हरा चारा दिया गया। हम उन सभी के अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने इस नेक कार्य में सहायता हेतु हाथ बढ़ाया है और भविष्य में भी उनसे इसी प्रकार के समर्थन की आशा करते हैं। इच्छुक लोग अपना दान हमें पेटिएम के माध्यम से 7982840067 पर भेज सकते हैं।



destitute and helpless creatures. With the kind donations collected this month, blind cows were served fresh green fodder at a Gaushala located in Mehrauli. We are extremely thankful to all who have extended a helping hand in this noble cause and looking forward to the same support in the future too. Interested people can send us their donations through Paytm at 7982840067.

✿ Youth camps at NIT Hamirpur (ISKCON, Punjabi Bagh)

Devotees from the IYF organized camps for students at NIT Hamirpur. The 5-day camp saw participation by over 20 students who visited several holy sites including Jyotisar, Brahma Sarovar, Bharat Kup, Ram Shaiya, Janaki Kund, and Gupt Godavari. The camp saw many students committing to chanting the holy names and reading the Bhagavad Gita regularly.

✿ Harinama Sankirtan (IYF, ISKCON Dwarka)

The Sankirtan by the IYF devotees was carried out at Mahavir Enclave, Tilak Nagar, Dwarka Mor, and many more places. The youths were armed with Mridanga and Kartala and were spreading the word of Gauranga. All the people of the locality were mesmerized by sankirtan. Each devotee was putting his heart into distributing the message of Krishna to each conditioned soul. Their smiling faces were evidence of the bliss they were feeling.

✿ Candana Yatra begins on Akshaya Tritiya (23rd April)

The festival of Candana Yatra was celebrated with great enthusiasm at ISKCON, Delhi. Devotees thronged the temple to make sandalwood paste for the Lord. This paste is offered to the deities to relieve Them from the heat. This is a celebration that takes place every year, as a reminder of the service of a great Acharya, Madhavendra Puri. The deities were anointed with candana paste on all days. On special occasions and Ekadashis, this paste makes their complete form even more beautiful. Visitors and devotees partook of the divine service with bliss and hope of pleasing Their Lordships. 23rd April also marks the auspicious tithi of Akshaya Tritiya. While people all around India, celebrate this as a day to multiply their material investments, devotees use this opportunity to add bhakti credits to their balance sheets. The day is spent chanting more, reading more, and hearing about the pastimes of the Lord.



✿ एनआईटी हमीरपुर में युवा शिविर (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

IYF के भक्तों ने NIT हमीरपुर के छात्रों हेतु शिविर का आयोजन किया। 5 दिवसीय शिविर में 20 से अधिक छात्रों ने भाग लिया, जिन्होंने ज्योतिषर, ब्रह्म सरोवर, भरत कूप, राम शैया, जानकी कुंड एवं गुप्त गोदावरी सहित कई पवित्र स्थलों का दर्शन किया। शिविर में कई छात्रों ने पवित्र हरिनाम का जाप करने एवं नियमित रूप से भगवद गीता पढ़ने का संकल्प लिया।



✿ हरिनाम संकीर्तन (आईवाईएफ, इस्कॉन द्वारका)

आईवाईएफ भक्तों द्वारा महावीर एन्क्लेव, तिलक नगर, द्वारका मोड़ एवं कई अन्य स्थानों पर संकीर्तन निकाला गया। युवक मृदंग एवं करताल से युक्त थे और भगवान् गौरांग की वाणी का प्रचार कर रहे थे। उस क्षेत्र के सभी लोग संकीर्तन से मंत्रमुग्ध हो गए। प्रत्येक भक्त हर एक बद्ध आत्मा को कृष्ण का संदेश वितरित करने में अपना हृदय लगा रहा था। उनके प्रसन्नचित्त मुखमण्डल इस बात का प्रमाण थे कि वे किस कोटि का आनंद अनुभव कर रहे थे।

✿ अक्षय तृतीया से चंदन यात्रा आरम्भ (23 अप्रैल)

दिल्ली के इस्कॉन मंदिर में चंदन यात्रा का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भगवान् के लिए चंदन का लेप बनाने (घिसने) हेतु मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहा। यह लेप देवताओं को गर्मी से आराम दिलाने के लिए अर्पित किया जाता है। यह एक महान आचार्य माधवेंद्र पुरी द्वारा की गई भगवद सेवा के स्मरण में प्रति वर्ष मनाया जाने वाला उत्सव है। उत्सव के प्रत्येक दिन देवताओं का चंदन के लेप से अभिषेक किया जाता है।





✿ Golden Brick Ceremony (23rd Apr) (ISKCON, Rohini)

One of the many temples of Delhi NCR, ISKCON Rohini is gearing up for a grand opening soon. The precursor ceremonies to this event have begun. The second Golden Brick Placement was held on 23rd April, on the auspicious occasion of Akshaya Tritiya. 'Golden Brick' has been one of the chief fundraising schemes for temple construction. This scheme has yielded a handsome donation over a period of several years. In the 2nd programme too more than five hundred bricks were placed under the pedestal of Sri Sri Radha Madhav and Sri Rama Darbar.

Honourable MLA, Aam Aadmi Party, from Rithala Constituency, Mr. Mahinder Goel graced the occasion. He personally placed two golden bricks under the lotus feet of Their Lordships. This festival was performed in the presence of H.H. Gopal Krishna Goswami, Chairman and BBT Trustee, ISKCON. He blessed all present with his spiritual discourse. Hundreds attended this celebration and partook of darshans, participated in the resounding kirtan and experienced the blissful aspect of devotional life.

✿ Appearance of Srimati Sita Devi (29th April) (ISKCON, East of Kailash)

Srimati Sita Devi is the eternal consort of Lord Rama. She exemplifies service, devotion, and undeterred love for the Lord. Her pastimes with the Lord are relishable for all living beings and continue to have a special place in our life and culture. The appearance of Sita Devi was celebrated with abhishek amidst kirtan and chanting. Devotees partook in sumptuous prasadam and relished the pastimes of Sita Devi.



विशेष अवसरों और एकादशियों पर यह लेप उनके सम्पूर्ण रूप को और भी सुन्दर बना देता है। भक्तों एवं आगंतुक श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य को प्रसन्न करने की आशा के साथ दिव्य सेवा में आनंद पूर्वक भाग लिया। 23 अप्रैल को अक्षय तृतीया की शुभ तिथि भी है। पूरे भारत में लोग इसे अपने भौतिक निवेश में वृद्धि कराने वाले एक दिन के रूप में मनाते हैं, जबकि भक्तगण इस अवसर का उपयोग अपनी आध्यात्मिक बैलेंस शीट में भक्ति क्रेडिट जोड़ने हेतु करते हैं। यह दिन अधिक जप करने, अधिक अध्यन एवं भगवान् की लीलाओं के विषय में सुनने में व्यतीत होता है।

✿ गोल्डन ब्रिक उत्सव (23 अप्रैल) (इस्कॉन रोहिणी)

दिल्ली एनसीआर के कई मंदिरों में से एक, इस्कॉन रोहिणी शीघ्र ही भव्य उद्घाटन हेतु तैयार है। इस आयोजन हेतु पूर्वाभ्यास समारोह आरम्भ हो चुके हैं। द्वितीय स्वर्णिम ईंट की स्थापना 23 अप्रैल को अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर आयोजित की गई। 'स्वर्णिम ईंट' योजना मंदिर निर्माण हेतु धनार्जन करने वाली प्रमुख योजनाओं में से एक रही है। इस योजना से कई वर्षों की अवधि में एक अच्छा दान अर्जित किया गया है। द्वितीय समारोह में भी पाँच सौ से अधिक ईंटें श्री श्री राधा माधव एवं श्री राम दरबार के आसन के नीचे स्थापित की गईं। रिठाला विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के माननीय विधायक श्री महिंदर गोयल जी ने इस अवसर पर उपस्थित होकर अवसर की शोभा बढ़ाई। उन्होंने स्वयं श्री भगवान के चरण कमलों के नीचे दो स्वर्णिम ईंटें स्थापित कीं। यह उत्सव इस्कॉन के अध्यक्ष एवं बीबीटी ट्रस्टी, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज जी की उपस्थिति में आयोजित किया गया। उन्होंने अपने आध्यात्मिक प्रवचन से उपस्थित सभी लोगों को आशीर्वाचन प्रदान किये। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने इस उत्सव में उपस्थित होकर दर्शन लाभ लिया एवं गुंजायमान कीर्तन में भाग लेकर भक्ति के आध्यात्मिक और आनंदमय पहलू को अनुभव किया।



✿ श्रीमती सीता देवी का प्राकट्य (29 अप्रैल) (इस्कॉन, ईस्ट ऑफ कैलाश)

श्रीमती सीता देवी भगवान् राम की शाश्वत संगिनी हैं। वह भगवान् के लिए सेवा, भक्ति और अविचलित प्रेम का उदाहरण है। भगवान् के साथ उनकी लीलाएं सभी जीवित प्राणियों हेतु सुखद अनुभव हैं और हमारे जीवन तथा संस्कृति में एक विशेष स्थान रखती हैं। कीर्तन व मंत्रोच्चार के मध्य सीता देवी के प्राकट्य का अभिषेक किया गया। भक्तों ने भव्य भोज प्रसादम में भाग लिया एवं सीता देवी की लीलाओं का आनंद लिया।



Upcoming events:

✿ Narasimha Chaturdasi (4th May)

Lord Narasimha appeared to protect His exalted devotee, Prahlada Maharaja. His appearance is testimony to his declaration in Bhagavad Gita: "paritr ya s dh n ". His love for His devotees is evident from the pains that He takes to save them from demoniac powers. Lord Narasimha Deva is the ultimate shelter, destroying all obstacles, a devotee faces during his spiritual journey. The appearance of Lord Narasimha Deva will be celebrated with abhishek, kirtan, chanting, and fasting till dusk. Devotees seek the shelter of the Lord, to remain fixed on the devotional path, amidst the onslaught of Maya. The day will be spent reading the Srimad Bhagavatam and reciting prayers to win the favour of the most merciful, Lord Narasimha.



Installation of Lord Narasimha Deva at ISKCON, Delhi

Sri Sri Radha Parthasarathi Temple will welcome Lord Narasimha Deva on this auspicious occasion. A beautiful marble altar has been erected with intricate patterns and exquisite workmanship. An elaborate ceremony has been planned to make this grand event the grandest one. The festivities begin on 2nd May when the Vastu Homa will be conducted for the newly constructed altar. Kalasha sthapana will take place on 3rd May, amidst the chanting of Vedic mantras and kirtan. The beautiful festival of Netronmilana will be held at 6 pm on 3rd May, in the presence of H.H. Gopal Krishna Goswami Maharaja, who will be part of all other rituals. On the 4th of May, the Prana Pratishtha ceremony will be conducted at 7 am. Devotees will participate in this in large numbers. A Maha-abhishek will be conducted in the evening, followed by the Ekadashi feast. Devotees will spend almost three days preparing their minds and hearts to welcome Their Lordships, leading to the culmination of this auspicious installation.

✿ End of Tulasi Jala Dana (15th May)

The festival of Jala Dana culminated on 15th May. Devotees prayed and sought the mercy of 'bhaktipradayani' Tulasi Devi. By her mercy, one can catapult far ahead on the path of devotional service.

✿ Nirjala Ekadashi (31st May)

Ekadashi is 'bhaktijanani', an integral part of the process of bhakti. Those who seek the favor of the Lord observe it with much reverence and determination, for the pleasure of the Lord. Pandava Nirjala Ekadashi will be observed on 31st May.



आगामी कार्यक्रम

✿ नरसिंह चतुर्दशी (4 मई)

भगवान् नरसिंह अपने परम भक्त प्रह्लाद महाराज की रक्षा के लिए प्रकट हुए। उनका प्राकट्य भगवद गीता में उनकी घोषणा: "परित्राणाय साधुनाम" का प्रमाण है। अपने भक्तों के प्रति उनका प्रेम उस पीड़ा से स्पष्ट होता है जो वे, उन्हें आसुरी शक्तियों से बचाने हेतु उठाते हैं। भगवान् नरसिंह देव परम आश्रय हैं, और उन सभी बाधाओं को नष्ट करते हैं, जिनका एक भक्त अपनी आध्यात्मिक यात्रा में सामना करता है। भगवान् नरसिंह देव का प्राकट्य, अभिषेक, कीर्तन, मंत्रोच्चारण और संध्याकाल तक उपवास के साथ मनाया

जाएगा। भक्तगण माया के आक्रमण के बीच, भक्ति मार्ग पर स्थिर बने रहने हेतु, भगवान् की शरण ग्रहण करते हैं। यह दिन श्रीमद भागवतम पढ़ने और परम दयालु, भगवान् नरसिंह देव की कृपा प्राप्ति हेतु प्रार्थना करने में व्यतीत होगा।

इस्कॉन, दिल्ली मंदिर में भगवान् नरसिंह देव की स्थापना

श्री श्री राधा पार्थसारथी मंदिर इस पावन अवसर पर भगवान् नरसिंह देव का स्वागत करेगा। जटिल प्रतिमान एवं उत्तम कारीगरी के साथ संगमरमर की एक सुंदर विग्रह वेदी बनाई गई है। इस भव्य आयोजन को भव्यतम आयोजन बनाने हेतु एक विस्तृत समारोह की योजना तैयार है। उत्सव 2 मई को आरम्भ होगा, जब नवनिर्मित वेदी के लिए वास्तु होम आयोजित किया जाएगा। 3 मई को, वैदिक मंत्रोच्चारण और कीर्तन के मध्य कलश स्थापना होगी। नेत्रमिलन का सुंदर उत्सव 3 मई को शाम 6 बजे परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज की उपस्थिति में आयोजित किया जाएगा, जो अन्य सभी अनुष्ठानों का भी हिस्सा रहेंगे। 4 मई को सुबह सात बजे प्राण प्रतिष्ठा समारोह होगा। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होंगे। संध्याकाळ में महा-अभिषेक होगा, इसके उपरान्त एकादशी भोज प्रसादम होगा। भक्तगण लगभग तीन दिनों तक अपने मन और हृदय को अपने आराध्य का स्वागत करने हेतु प्रस्तुत करेंगे, जिसकी परिणति इस परम पावन स्थापना में होगी।

✿ तुलसी जल दान का समापन (15 मई)

जल दान का उत्सव 15 मई को समाप्त होगा। भक्तगण प्रार्थना करेंगे और 'भक्तिप्रदायिनी' तुलसी देवी की कृपा प्राप्ति की याचना करेंगे। उनकी कृपा से, भक्ति सेवा के मार्ग पर बहुत उन्नति की जा सकती है।

✿ निर्जला एकादशी (31 मई)

एकादशी 'भक्तिजननी' है, जो भक्ति की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। जो लोग प्रभु की कृपा चाहते हैं, वे प्रभु की प्रसन्नता के लिए बहुत श्रद्धा और दृढ़ संकल्प के साथ इसका पालन करते हैं। पांडव निर्जला एकादशी 31 मई को मनाई जाएगी।

SELFLESS AND SEAMLESS DEVOTION: LESSONS FROM THE LIFE & CHARACTER OF PRAHLADA

Devotional service rendered to God with a materially unmotivated heart and with unwavering regularity completely satisfies the self.

Achieving anything in life requires focus and determination. If our efforts and attitudes are consistent, we can achieve our intended goals easily and quickly. But if our motives are impure and our endeavors distracted, our success is hampered. In spiritual life, pure intentions and consistent focus on the prescribed practices are of vital importance. The timeless scripture Srimad-Bhagavatam (1.2.6) emphasizes this principle:

*sa vai pumsam paro dharmo
yato bhaktir adhoksaje
ahaituky apratihata
yayatma suprasidati*

“The supreme occupation [dharma] for all humanity is that by which men can attain to loving devotional service unto the transcendent Lord. Such devotional service must be unmotivated and uninterrupted to completely satisfy the self.”

Bhakti, or pure devotional service unto the Supreme Lord Kṛṣṇa or Viṣṇu, is described to be ahaituki and apratihata. Ahaituki means not to have any selfish agendas behind one’s spiritual practice. Apratihata means not to have any interruptions or irregularities in the practice. Advancement and satisfaction in bhakti depend on the purity of our intent and the consistency of our attempts.

In this world, our devotion to God is often obstructed by obstacles of various types.



When reversals come, spiritual seekers strive to remain focused on their devotion by deriving inspiration from exemplary devotees. A wonderful example of such causeless and ceaseless devotion to God is seen in the life of a young devotee named Prahlada, whose story is told in Srimad-Bhagavatam.

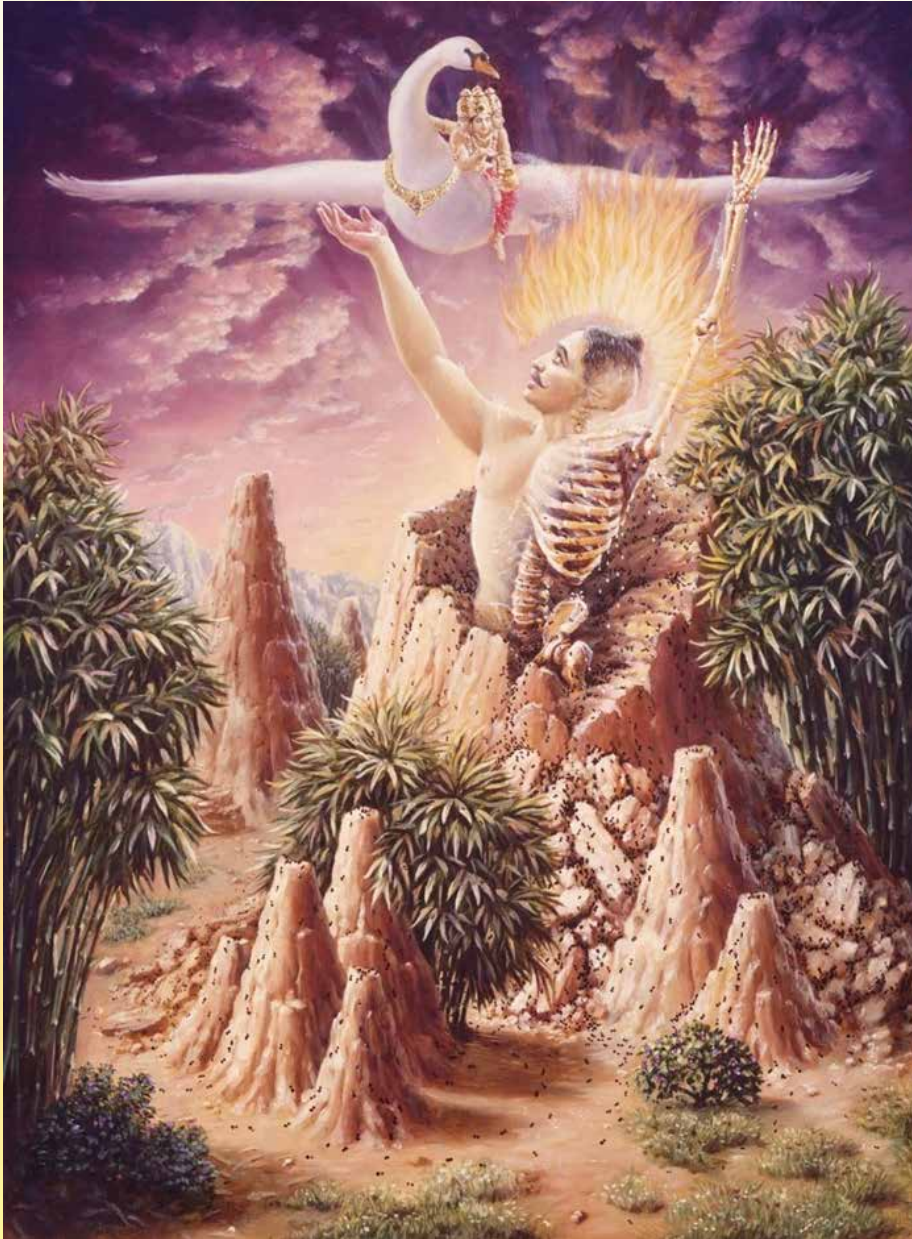
Transmission That Transcends All Barriers

Prahlada was the son of a great demoniac king named Hiranyakasipu. When Prahlada was in the womb of his mother, Kayadhu, Hiranyakasipu went to perform austerities to get boons from Lord Brahma, the creator of the universe. In his absence, the demigods attacked the demons and arrested Kayadhu to kill her

child after his birth. But Narada Muni stopped the demigods and sheltered pregnant Kayadhu in his own hermitage.

Narada Muni then taught Kayadhu the principles of spiritual life and the glories of devotional service unto the Supreme Lord Viṣṇu. But Kayadhu could not hear those teachings attentively, as she was anxious about her husband’s return and her child’s well-being. However, Prahlada, who was still within Kayadhu’s womb, heard those divine instructions very eagerly, and that hearing resulted in his unflinching devotion to Lord Viṣṇu.

In a communication system, when the transmitter of a signal is potent and the receiver is perfectly tuned to the signal, the



transmission of data takes place very effectively. Similarly, in spiritual communication, when the guru is an advanced devotee of Kṛṣṇa and the disciple is eager to receive knowledge and inspiration from the guru, the transmission of bhakti takes place effectively. Because of Prahlaḍa's spiritual eagerness, being in his mother's womb with undeveloped senses was no barrier for him to receive the knowledge of bhakti from Narada Muni.

Age, Caste, and Company Are No Bar

Hiranyakasipu's austerities were so extreme that Lord Brahma descended from his planet and told

Hiranyakasipu to ask for a boon. Hiranyakasipu asked Lord Brahma to grant him immortality.

When Brahma replied that he didn't have the power to do so, Hiranyakasipu asked him to grant him the boons of not meeting death from any living entity created by Brahma, inside or outside a house, during the day or night, on the ground or in the sky, by any weapon, human, animal, demigod, snake, and so on. Obligated, Brahma granted those rare boons. Confident that he had attained immortality by these boons, Hiranyakasipu became very proud. Out of his hatred for Viṣṇu

and falsely thinking himself to be the supreme controller, he stopped the worship of Viṣṇu in his kingdom and tormented Viṣṇu's devotees in various ways.

Although Prahlaḍa was the son of this envious demon, Prahlaḍa himself had no demoniac tendencies or attachment to his father's extensive property and influence. His heart was filled with love for Lord Viṣṇu, and as a result, the so-called privileges and pleasures of this mortal world seemed trivial to him.

Little Prahlaḍa, hardly five years old, was sent to the school where the children of demons studied politics and diplomacy under the materialistic teachers San a and Amarka. Prahlaḍa never liked those teachings and was steadfast in the teachings of bhakti-yoga given by Narada Muni.

Prahlaḍa's birth in a demoniac family, his tender age, and the company of those who hated Lord Viṣṇu didn't affect his devotion to Viṣṇu. When our internal consciousness is focused on our beloved objective, external obstacles cannot hamper our success. Though the external atmosphere is surcharged with nondevotional vibrations, a determined devotee's inner atmosphere is saturated with love for God.

Generally, we are influenced by the people around us. But if we are determined and prayerful, we can transcend the influence of negative association and achieve our higher goals. Prahlaḍa, through his constant absorption in Lord Viṣṇu, effortlessly overcame every crisis.

Fearlessness in Facing Confrontations

Hiranyakasipu once tested Prahlaḍa's knowledge by asking

him to repeat what he had learned from his teachers. Ignoring the topics taught by his materialistic teachers, Prahlada fearlessly repeated the essence of the teachings of Narada Muni, his real teacher. He instructed his powerful father that worshipping Lord Visnu is in the best interest of every human being.

*sri-prahlada uvaca
sravanam kirtanam visnoh
smaranam pada-sevanam
arcanam vandanam dasyam
sakhyam atma-nivedanam
iti pumsarpita visnau
bhaktis cen nava-laksana
kriyeta bhagavatya addha
tan manye 'dhitam uttamam*

"Hearing and chanting about the transcendental holy name, form, qualities, paraphernalia and pastimes of Lord Visnu, remembering them, serving the lotus feet of the Lord, offering the Lord respectful worship with sixteen types of paraphernalia, offering prayers to the Lord, becoming His servant, considering the Lord one's best friend, and surrendering everything unto Him (in other words, serving Him with the body, mind and words) – these nine processes are accepted as pure devotional service. One who has dedicated his life to the service of Krsna through these nine methods should be understood to be the most learned person, for he has acquired complete knowledge." (Bhagavatam 7.5.23–24) Prahlada fearlessly explained to his father that the materialistic way of life entangles one in this world but service to the devotees of Krsna or Visnu frees one from material contamination and elevates one to the spiritual platform.

Even when his teachers, San a and Amarka, chastised Prahlada, he didn't budge from



his determination in bhakti. He fearlessly spoke the truth, which was against their philosophy of discriminating between people as friends and enemies. He said that every living being is a part of God and is His servant, and thus we are all one in quality.

Facing a fierce demon and boldly confronting his conceptions is not possible for an ordinary person. A tender child generally fears chastisement and punishment by a strict elder, but Prahlada boldly opposed the demoniac philosophy of his teachers and Hiranyakasipu, while simultaneously being humble and respectful to them. Fearlessness and humility are natural symptoms of surrender to God.

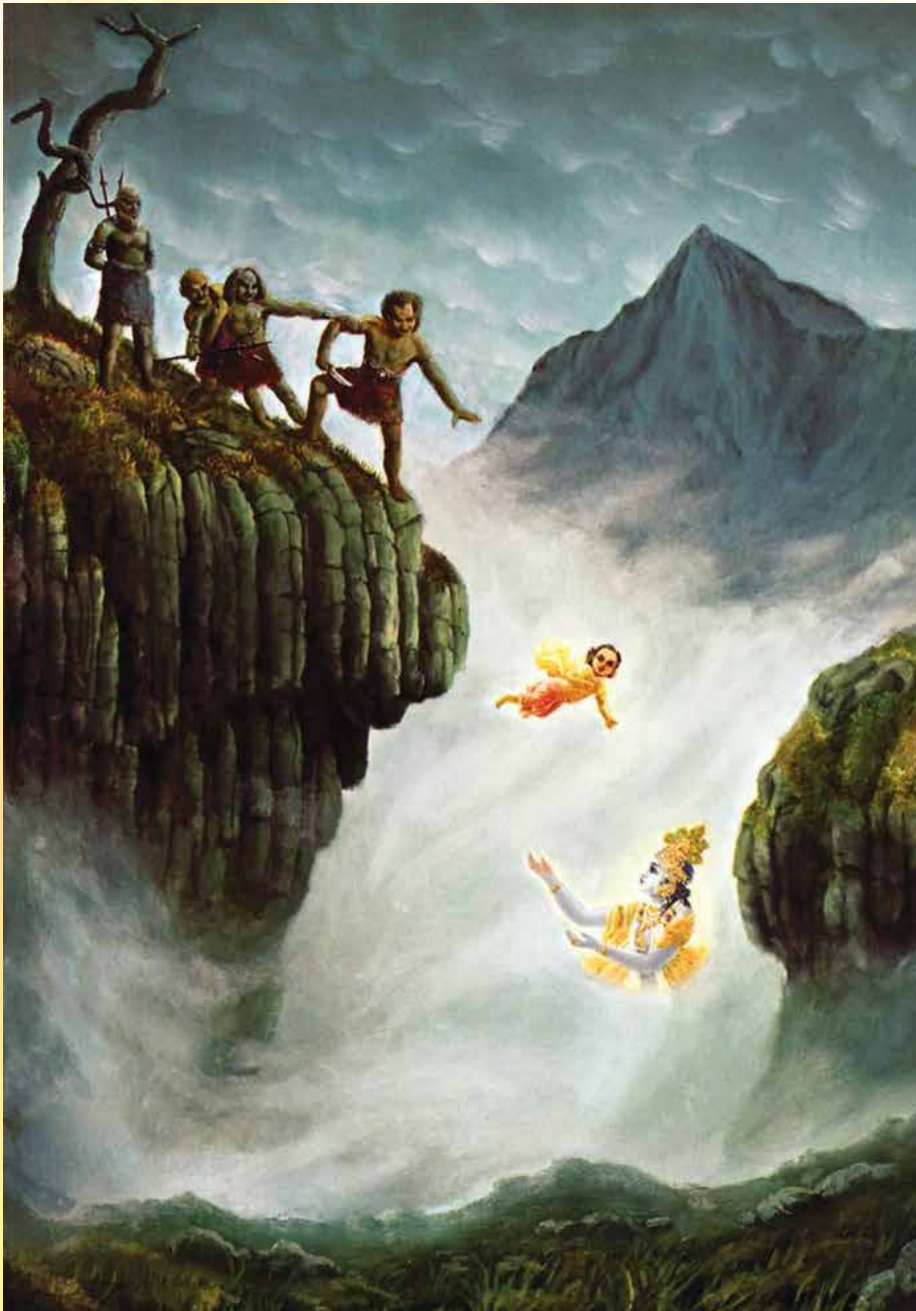
Even Deadly Dangers Do Not Matter

Enraged at Prahlada's staunch devotion to Lord Visnu, hard-hearted Hiranyakasipu tried to kill Prahlada. But Hiranyakasipu couldn't kill him by throwing him

under the feet of big elephants, throwing him among poisonous snakes, employing destructive spells, hurling him from the top of a hill, conjuring up illusory tricks, imprisoning him, poisoning him, starving him, exposing him to severe cold, wind, fire, and water, and throwing heavy stones to crush him.

Throughout these extreme abuses and mistreatments, Prahlada's faith in Lord Visnu and His protection didn't diminish even slightly. Further, he absolutely had no bitter feelings towards Hiranyakasipu, who tormented him in many ways. A devotee is ajata-satru: he is never hateful of anyone, even those who hate him.

Developing faith in God's protection is very rare. Even after attaining some faith, we are tested by the inevitable calamities of this world and may become disturbed. Ordinary people lose faith in God's protection or blame God for their



difficulties. Srila Prabhupada writes, "In case of benefit, no one will deny that it is God-sent, but in case of loss or reverses one becomes doubtful about how the Lord could be so unkind to His devotee as to put him in great difficulty." (Bhagavatam1.17.22, Purport)

Advanced devotees like Prahlada accept even reversals as God's blessings. Srila Prabhupada writes, "A devotee's conclusion is that no one is directly responsible for being a benefactor or mischief-monger without the sanction of

the Lord; therefore, he does not consider anyone to be directly responsible for such action. But in both the cases, he takes it for granted that either benefit or loss is God-sent, and thus it is His grace." (Bhagavatam1.17.22, Purport)

Divine Teachings in the Demons,, Arena

The attempts to kill Prahlada having failed, he was sent to school again. When his classmates called him to play in the absence of their teachers, Prahlada spoke to them in sweet words about the futility of material life.

Prahlada told them that we shouldn't waste the rare and valuable human life for sense gratification and get entangled in materialistic family affairs. Human beings should perfect their lives by worshiping the infallible Supreme Lord with bhakti right from childhood. Nothing is unobtainable when Lord Visnu is satisfied. The pure spirit soul gets entangled due to material intelligence. Bhakti, or devotion to Lord Visnu, is the best path to disentangle the soul from material existence. Thus Prahlada urged his classmates to take to Visnu-bhakti.

Prahlada's gentle demeanor attracted all his schoolmates, who were not very much contaminated by their materialistic surroundings. They loved Prahlada's teachings and rejected the instructions of San a and Amarka. Just as Narada Muni's pure teachings had inspired Prahlada although he was within his mother's womb, Prahlada's pure teachings inspired his schoolmates although they were mere children and the sons of demons. Inspiration in bhakti flows effectively when the hearts of both the proponent and the recipient are pure.

After All, It,,s the Power of God

San a and Amarka reported to Hiranyakasipu about Prahlada's activities in school, and Hiranyakasipu became furious. Perplexed about how his five-year-old boy could be so fearless, Hiranyakasipu asked Prahlada, "My son Prahlada, you rascal, you know that when I am angry all the planets of the three worlds tremble, along with their chief rulers. By whose power has a rascal like you become so impudent that you appear fearless and overstep my power to rule you?" (Bhagavatam7.8.6)

Prahlada replied that the source of his strength was also the source

of Hiranyakasipu's. That source – Lord Visnu – is the original source of all kinds of strength for every single being.

An advanced devotee is convinced that every living being is ultimately dependent on the Supreme Lord's power. Without the Lord's sanction, not a blade of grass moves.

When we love someone, we feel that person's presence always and everywhere. A devotee who is in love with the omniscient Godhead sees Him everywhere at all times. On the other hand, an atheistic person devoid of love of God cannot see Him anywhere and doesn't believe in His existence. Although having no qualification to see God, such a person challenges the devotees to show God.

Hiranyakasipu threatened to kill Prahlada and challengingly asked him if his God was present in a pillar in the assembly hall. Knowing the all-pervading nature of the all-powerful Supreme Lord, Prahlada firmly said, "Yes!" Hiranyakasipu struck the pillar in rage. To prove true the declaration of His devotee Prahlada that God is all-pervading, the Supreme Lord Visnu appeared from the pillar in an unprecedented form as Nrsimhadeva, half man and half lion.

After enjoying fighting for some time, Lord Nrsimhadeva placed Hiranyakasipu on His lap and killed him at sunset, in the doorway, merely with His nails. Although He is not obliged to do so, the Supreme Lord Nrsimhadeva respected the benedictions that Brahma had given to Hiranyakasipu. The demigods celebrated the Lord's victory and arrived on the scene to offer prayers to Lord Nrsimhadeva.

Accomplished but Not Arrogant

None of the demigods' prayers



could pacify the angry Lord Nrsimhadeva, however, and even Laksmi Devi, the Lord's eternal consort, was afraid to approach Him. Then Lord Brahma requested Prahlada to pacify Nrsimhadeva.

Although Prahlada was chosen to pacify the Lord when all the great demigods and sages had failed to do so, he didn't feel superior to them. A humble Vaisnava who is fully qualified to serve the Lord still thinks himself extremely low. He is never falsely proud of his qualifications. Prahlada prepared himself to offer prayers to the best of his ability, for his own purification.

In his heartfelt prayers, Prahlada showed his deep humility, devotion, eagerness for shelter, fear of conditioned life, compassion for the fallen souls, knowledge of the Godhead's unlimited opulence, and gratitude towards his guru, Narada Muni, who had taught him bhakti. In his prayers, Prahlada indirectly indicated and directly declared that bhakti is the ultimate refuge and that material opulences are futile.

*manye dhanabhijana-rūpa-tapah-sruta-
tejah-prabhava-bala-paurusa-buddhi-yogah
naradhanaya hi bhavanti parasya pumso
bhaktya tutosa bhagavan gaja-yūtha-paya*

Prahlada Maharaja said: "One

may possess wealth, an aristocratic family, beauty, austerity, education, sensory expertise, luster, influence, physical strength, diligence, intelligence, and mystic yogic power, but I think that even by all these qualifications one cannot satisfy the Supreme Personality of Godhead. However, one can satisfy the Lord simply by devotional service. Gajendra did this, and thus the Lord was satisfied with him.” (Bhagavatam 7.9.9)

It,,s Not a Business Transaction

Lord Nrsimhadeva was very pleased with Prahlada’s prayers and told him to ask for any benediction he wanted. Considering material benedictions to be impediments in bhakti-yoga, Prahlada asked Nrsimhadeva not to tempt him with boons. He told Him that he wasn’t a selfish merchant, trading his devotional service for some material benefit.

Prahlada said, “A servant who desires material profits from his master is certainly not a qualified servant or pure devotee. Similarly, a master who bestows benedictions upon his servant because of a desire to maintain a prestigious position as master is also not a pure master. O my Lord, I am Your unmotivated servant, and You are my eternal master. There is no need of our being anything other than master and servant. You are naturally my master, and I am naturally Your servant. We have no other relationship. O my Lord, best of the givers of benediction, if You at all want to bestow a desirable benediction upon me, then I pray from Your Lordship that within the core of my heart there be no material desires.” (Bhagavatam 7.10.5–7)

Prahlada then requested the Lord to excuse his father, and the Lord said that Hiranyakasipu had

been purified along with twenty-one generations of his ancestors.

Thus Prahlada serves as an unparalleled ideal example of selfless and seamless devotion unto Lord Visnu. By the mercy of Narada Muni, Prahlada received the seed of bhakti, and by performing bhakti without motivations and interruptions, he became exalted, experiencing the bliss of bhakti within himself at every moment.

Progress in bhakti depends on the intent and intensity of one’s practice. One who performs bhakti with selfish motivations and undue interruptions cannot experience the intended pleasure of the heart.

Both a candle and a 2000-watt bulb can light a dark room. But the dim candle flame illuminates a corner of the room, while the bulb illuminates the entire room. Similarly, if one’s practice of bhakti is weak and wavering like the dim flame of a candle, one cannot derive the full pleasure that bhakti can offer. On the other hand, if one’s performance of bhakti is as powerful as a 2000-watt bulb, one experiences the full bliss of bhakti. Therefore, seeking inspiration from the character of little Prahlada, let us take our baby steps to intensify our absorption in the practice of devotional service.



By the divine mercy and potency of Sri Guru and Sri Gauranga, we have completed 9 years of this newsletter. This newsletter would not have continued for so many years without the valuable contributions of the team of devotees who tirelessly work every month to make this effort possible.

MEET THE TEAM

H.G. Ganga Shakti Devidasi



Content writer for ISKCON, East of Kailash news and upcoming events

Aditi Dev



Proof Reader for English Content

H.G. Dashrathi Rupa Das



Hindi translator and proof reader

H.G. Bhakta Sevaya Das



Designer

We would also like to gratefully acknowledge the contributions of the following devotees and leaders:

H.G. Urmila Mataji – ISKCON Girls Forum, East of Kailash
H.G. Sarvapriya Prabhu – Vaikuntha Fun School and Ashraya Vaisnavi Forum
H.G. Amogh Lila Prabhu and H.G. Bali Murari Prabhu – ISKCON Dwarka
H.G. Prem Kishore Prabhu – Institute of Science and Spirituality
H.G. Premanjana Prabhu – ISKCON Punjabi Bagh
H.G. Raas Raman Prabhu – ISKCON Rohini

Do you want to find a
Vaishnava Partner
for a
Krishna conscious
marriage???



Look no further....

Please sign up on
www.kcmatches.com

श्री नृसिंह पुराण

(With Original Sanskrit Verses and Hindi Translation)
Hardbound Premium Quality Book.

Releasing on the most auspicious day of
Sri Nrsimha Chaturdashi
on 4th May 2023, Thursday at ISKCON Delhi,
Sri Sri Radha Parthasarathi Mandir.

Special Discount on Pre-booking.
Pre-book Now by sending

WhatsApp on +91-8506805060
just @600/- with

FREE SHIPPING IN INDIA

Visit our online store: www.goldenagemedia.com

LIMITED STOCK

₹ 600/-

PREACHING CENTRES AROUND DELHI NCR

ISKCON, EAST OF KAILASH

Chirag Delhi-168, Sejal Chowpal, Near Subzi Mandi
Chirag Delhi, New Delhi-110017

Contact at: 9911717110, 9910381818, 9810484885

Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

Okhla- Chhuria Muhalla Chowpal, Tehkhand Village
Okhla, Phase – I, New Delhi-110020

Contact at: 8588991778, 9810016516, 9911613165, 9971755934

Program: Every Tuesday, Evening 7 PM to 9 PM

Kotla Mubarakpur- Shri Omkareshwar Shiv Mandir
(Panghat wala), Gurudwara Road

Opp. Sher Singh Bazar, Kotla Mubarakpur, New Delhi-110003

Contact at: 9350941626, 9818767673, 9311510999

Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

Khanpur- B-192-B, Jawahar Park, Devli Road
(Near Cambridge School), Khanpur, New Delhi-110062

Contact at: 9818700589, 9810203181, 9910636160

Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

Hari Nagar, Ashram- 217, Saini Chaupal, Ashram Or 119, VIIT Computer
Institute (Basement)

Hari Nagar, Ashram, New Delhi-110014

Contact at: 9811281521, 011-26348371

Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

East Vinod Nagar-E – 322, Gali No. 8, East Vinod Nagar, Delhi-110091

Contact at: 9810114041, 9958680942

Program: Every Saturday, Evening 6.30 PM to 8.30 PM

Sriniwas Puri-Sanatan Dharam Durga Mandir

1st Floor, J J Colony near to Gurudwara, Sriniwas Puri,

New Delhi-110065

Contact at: 9711120128, 9654537632

Program: Every Wednesday, Evening 7.30 PM to 9 PM

Sangam Vihar- E-6/102, Near Mahavir Vatika

Sangam Vihar, New Delhi-110080,

Contact at: 9212495394, 9810438870

Program: Every Sunday: Evening 5 PM to 8 PM

Every Morning: 5 AM to 7 AM (Mantra Meditation)

Every Evening: 7 PM to 9 PM (Aarti)

Boat Club-Rajpath Lawn near Central Secretariat Metro Station,

New Delhi -110001, Every Wednesday 1PM -2 PM

Contact : 9560291770, 9717647134

Panchsheel Enclave-ISKCON DIVE, A-1/7 Panchsheel Enclave,
New Delhi-110017

Mayur Vihar-Srivas Angan Namahatta Center, 223-A Pkt.

C ph.2 Mayur Vihar

Every Saturday 5.30 - 7.30 PM

Contact ~ 9971999506 & 9717647134

Sarojini Nagar-Bharat Sewak Samaj Nursery School, Opp. Keshav Park,
Sarojini Nagar Market, New Delhi – 110023

Every Monday 6 PM to 8 PM

Contact : 9899694898, 9311694898

Lodi Road-Pocket – 2 Park, Lodhi Road Complex, New Delhi – 110003

Every Saturday 5 PM to 7 PM

Contact : 9868236689, 8910894795

R.K.Puram-DMS Park (Opp. House No. 238), Sector - 7, R.K. Puram,
New Delhi –22, Every Sunday 5 PM to 7 PM

Contact: 9899179915, 860485243, 8447151399

Gole Market-Model Park, Sector – 4, DIZ Area, Gole Market,
New Delhi – 110001

Every Saturday 5 PM to 7 PM

Contact: 9560291770, 9717635883

Sant Kanwar Ram Mandir-6.15pm. Every MONDAY at Jal Vihar Road, Lajpat
Nagar -2, New Delhi Contact- 9971397187.

East of Kailash-Katha - Amritam, 6.45 pm every Sunday, Venue- Prasadam
Hall, ISKCON Temple, Contact: 99582 40699, 70113 26781.

East of Kailash-Yashoda Angan, 6.45pm every Sunday, Venue- JCC Room,
Iskcon temple, East of Kailash, Contact:- 97110 06604

ISKCON, GURUGRAM

RADHA KRISHNA MANDIR-New Colony, Gurugram,

Every Saturday-6:30 to 8:30PM

Melodious Kirtan, Discourse on wisdom of Bhagvad Gita and Krishna Prasadam

Rail Vihar Community Center

Sec 47, Gurugram, Every Wednesday 7:00 to 9:30PM, Melodious Kirtan,

Discourse on wisdom of Bhagvad Gita and Krishna Prasadam

Katwaria Sarai - F 117, Basement, Near well No 1, Katwaria Sarai

New Delhi 110016. Contact: +91 75033 48819, Youth program - Every Friday 7.30 PM.

Family program - Every Saturday 7.30 PM

Ladosarai - F-6, Hare Krishna wali Gali, Near Panchayat Bhawan, Ladosarai, New

Delhi-110030. Contact No.: 7011003974, 9888815430, 9717600814. Youth Program:

Tuesday 07:30 PM; Congregation Program: Sunday- 5:00 PM

Mehrauli - Opposite Agarwal Dharmashala, Mehta chowk,
Ward no 8, Mehrauli , New Delhi 110030.

Contact: 9711862441, 9911399960, 9810565805.

Congregation Program: Every Saturday, 4-6 PM;

Youth Program: Every Sunday, 4-5PM

Chattarpur - Nitin Niwas H. No. 133, Chattarpur, Near Tyagi Chaupal,
Near Axis Bank ATM, South Delhi, 110074,

Contact: 9910290149

Program: Every Sunday 5.30PM To 7.30PM

Aya Nagar 1- Shiv Hansa Complex, Phase VI, G Block, Bandh Road,
Opp Max Gain Shopping Centre, Aya Nagar.

Contact: 9953891845, 8860681843, Program: Every Sunday, 6 To 8 PM

Aya Nagar 2- Opp MCD School, Near Easy Day, Main Road, Aya Nagar, Delhi.

Contact: 9899729858, 8368656274

Program: Every Sunday 4 To 6 PM

Malviya Nagar - 90/77, Basement, Behind Malviya Hospital, Malviya Nagar.

Contact No. 8097263066, Program: Every Saturday 6PM Onwards

Khirk Extension - JG-35, Near Krishna Temple, Inside Left Street, Khirk Extension.

Contact No. +91 98911 27996

Program: Every Sunday 5 PM Onwards

Kishan Garh - H.No.602, Ward No.3, Bhuiyan Chowk ,Gaushala Road
Kishangarh,Vasant Kunj. Contact No- 8447358738

Every Sunday, 3:00 PM onwards

Sangam Vihar - D-170, Gali no. 4, Hare Krishna Centre Barsana Dham,

Nearby Sona Sweets, Sangam Vihar, New Delhi-110080.

Contact number:- 8851286364, 8447042470, Every Saturday; 6:00 PM-8:00PM;

Every Friday and Sunday; 5:30-7:00AM onwards

East Of Kailash - 194 FF Amritpuri Garhi, East of Kailash, Near MCD School,
New Delhi-110065. Contact: 9811347826, 9990503548.

Youth Program:- Saturday 7:00 PM

Ber Sarai - House number -2, Near Government Dispensary, BerSarai, New Delhi,

Contact - 8882347935, 7065835531

Youth Program : Monday 7:00PM, Congregation Program : Saturday 4:00PM

Vasant Kunj - B100 (Basement), B Block, Mother Dairy, Vasant Kunj Enclave,
New Delhi-110070. Contact No.: 8860246574, 8879005088.

Every Sunday- 04:00 PM

Saket - C-109, Ground Floor, Near Mother Dairy, Paryavaran Complex, Saket,
New Delhi-110030, Contact: 8287713680, 8130505488, 9667427986

Youth Program: Saturday 07:00 PM; Congregation Program: Friday 07:00 PM

Tigri Extension - C-10 Hare Krishna Centre, Maha Shiv Shakti Mandir,
Tigri Extension, New Delhi-110080. Contact: 8851286364, 9810433117

Every Sunday, 11:00am - 1:00PM

Ghitorni - House no. 270, Balmiki choupal, Near Kali Mata Mandir, Ghitorni,
New Delhi-110030, Contact No. -9975756916, 7065835531

Youth Program- Thursday-7:00PM

Sultanpur - 2nd floor,Waliya house,near Gurudwara, Sultanpur, Delhi 110030.

Contact-9667478077. Youth program-Sunday 7:00 PM;

Congregation Program-Friday 5:00 PM

Prahlad Pur - A-132, DDA Flats, Prahladpur New Delhi 110044

Contact: 9999464382, 9650543321, Every Sunday 04:00 PM

Paharganj - 1st Floor, Radha Krishna Mandir, Near Jain Mandir, Mantola, Paharganj,
Contact No. 9818188182; 9810224106

Program: Every Saturday 7:00 To 8:00 PM

Nitya Seva

Nitya Seva-Niswartha Seva is a selfless monthly donation program for serving the Lord. It's purely voluntary, based on the desire, inclination and capability of the donor. The mode of donation could be through cash, cheque or ECS. One can choose to donate any amount as Lord Krishna sees our intent behind that donation. A formal receipt will be provided for each donation. For more details,

- Sri Sri Radha Parthasarathi Nitya Vighraha Sewa including bhoga offerings (fruits, vegetables, dry fruits, wheat flour, sugar, desi ghee, etc), deity dresses, deity jewellery and other paraphernalia, Please contact HG Janmashtami Chandra Prabhu @ 7011326781, 9999035120
- For ISKCON, East of Kailash, Please contact HG Baladeva Sakha Prabhu @ 9312069623
- For ISKCON, Punjabi Bagh, Please contact HG Premanjana Prabhu @ 9999197259.
- For ISKCON, Dwarka, Please contact HG Archit Prabhu @ 9891240059.
- For ISKCON, Gurugram, Please contact HG Narhari Prabhu @ 9034588881.
- For ISKCON, Faridabad, Please contact HG Ravi Shravan Prabhu @ 9999020059
- For ISKCON Panchsheel, Please contact HG Advaita Krishna Prabhu @ 9810630309/HG Rasraj Prabhu @ 9899922666
- For ISKCON East Delhi, Please contact @ 98115 10090



International Society for Krishna Consciousness

Founder Acharya - HDG A.C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada

ISKCON, East of Kailash - Hare Krishna Hill, East of Kailash, New Delhi-65

Web: www.iskcondelhi.com | Live Darshan: live.iskcondelhi.com

Facebook: www.facebook.com/iskcondelhi, Contact: 011-41625804, 26235133

ISKCON, Punjabi Bagh - 41/77, Srila Prabhupada marg,
West Punjabi Bagh, Delhi-26
Contact Person: HG Premanjana Prabhu (8802212763)

ISKCON, Dwarka - Plot No.-4, Sector-13, Dwarka, New Delhi-110075
Web: iskcondwarka.org, Facebook: www.facebook.com/iskcon.dwarka/
Contact: 9891240059, 8800223226

ISKCON, Gurugram - Sudarshan Dham, Main Sohna Road,
Badshahpur, Gurugram
Contact Person: HG Narhari Prabhu : 9034588881

ISKCON, Faridabad - Sri Sri Radha Govind Mandir, Gita Bhawan,
C-Block, Ashoka Enclave-II, Sector-37, Faridabad,
Phone : 0129-4145231, Email : gopisvardas@gmail.com

ISKCON, Bahadurgarh - Nahara-Nahari Road, Line Par Bahadurgarh,
Haryana - 124507, Phone: +91-9250128799
Email: info@iskconbahadurgarh.com

ISKCON, Rohini - Plot No-3, Institutional Area, Main Road,
Sector-25, Rohini New Delhi 110085
Phone: +91-9871276969
Email: iskcon.rohini@gmail.com

ISKCON Gurugram (Badshahpur) - Sudarshan Dham,
Gurgaon-Sohna Road, Badshahpur, Gurgaon (2.5kms from Vatika
Business park), Gurugram, Haryana 122001
Phone: +91-9250128799, Email: info@iskconbahadurgarh.com

ISKCON Ghaziabad - 11, ISKCON CHOWK R,
35, Hare Krishna Marg,
Block 11, Raj Nagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh 201002
Phone: 081309 92863, Email: iskcon.ghaziabad@pamho.net

ISKCON Chhattarpur - Village Near Shani Dham Mandir, Asola,
Fatehpur Beri, New Delhi, Delhi 110074
Phone: 099537 40668

ISKCON Gurugram - ISKCON, Plot No 0,
Near Delhi Public School,
Sector-45, Gurugram, Haryana-122003
Phone: 09313905803, 08920451444, 09810070342
Email: iskcongurugram.sec45@gmail.com

Sri Sri Radha-Vallabh Temple - 2439, Chhipiwara, Chah Rahat,
Jama Masjid Rd, Old Delhi, Delhi-110006
Phone: 098112 72600

Sri Sri Radha Govind Dev Temple - Opposite NTPC Office, A-5,
Maharaja Agrasen Marg, Block A, Sector 33, Noida, Uttar
Pradesh-201301
Phone: 095604 76959

ISKCON East Delhi - Hare Krishna Center
12/115 Geeta Colony, Delhi-110031
Phone: +91 98115 10090, Email: iskcon.del@gmail.com